'समाज में हर मोड पर हो रहा है - दुर्योधन, दुशासन तथा शकुनी का सामना'

– राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी उषा बहनजी

समाज में हर मोड पर दुर्योधन, दुशासन तथा शकुनी जैसे पात्रों का सामना हमें करना पड रहा है, गीता में वर्णीत हर पात्र का आज की प्रासंगिकता से जुडा है । हमारें आंतरिक अच्छे गुण ही वास्तविक पाण्डव है, इन गुणों का अवगुणों से अथात् कौरवोंसे सामना प्रतिपल होता है । यह प्रतिपादन आंतरराष्ट्रीय राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी उषा बहनजीने किया, वे गीता प्रवचन को सम्बोधित कर रहे थे ।

महाभारत के समय की तुलना आज की प्रासंगीता से स्पष्ट करतें हूए उन्होने आगे कहा की, समाज में कितने शकूनी है, हर मोड पर एक शकूनी बैठा होगा जो घर घर में आग लगा रहा है, समाज इन शकूनी की बातों पर सत्य समज बैठा है । धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, भलाई बुराई, न्याय-अन्याय को भी नही व्यक्ती समज नही पा रहा है। समाज में आज धृतराष्ट्र जैसे लोग राष्ट्र को धृत भावना से हडप कर बैठा है, आज खुर्सी का तो सब जगह झगडा हो रहा है । वैश्विक स्थितीको देखा जाये तो आज का संसार एक विशेष संकटमय स्थिति से गुजर रहा है तो स्वयं भगावान को इस धरापर आकार इसासे इतिहास को एक नया मोड देते है, भावार्थ है की महाभारत के समय पर भगवान आये तो आज के इस कलियुग के अंत के समय अधर्म का विनाश करने के लिए भगवान को जरुर आना है । आज मनुष्य गीता को मानते है किन्तू गीता में कही बात को नही मानते, देवी देवता को तो मानते किन्तू देवताओंने दी शिक्षा को नही मानते, ठिक उसी प्रकार महात्मा तथा संतो को मानते किन्तू उन्होंने बताई बातों पर आचरण नही करतें । सत्य बातों को प्रत्यक्ष जीवन का आधार बनाना यह आज के मनुष्य को कठिन जाता है ।

आज के समाज की पारिवारीक स्थिती को हम देखते है, जो पाण्डव और कौरवों के बीच में भी थी। आज भी हम देख रहें है जो एक भाई दुसरें भाई के साथ नही रहना चाहता है, पाण्डव और कौरवों के बीच में भी यही दिखाई दिया, कौरवोंने पाण्डवोंको पांच गाव तो क्या एक सूई की भी नौक नही दिया । समाज में आज भी कोई भाई ऐसे होते जो दुसरें भाई को संपत्ती के बटवारें में समान स्थान नही देते। आज के समाज में मातपिता , भाई बहन, पितापूत्र आदियों में टकराव दिखाई देता. अभिमान इतना की कुलका नाश हो जाय फिर भी घृणा द्वेष नही छोडते. ठिक आज भी हर परिवार में ऐसी स्थिति आ रही है, गीता का ज्ञान महाभारत के समय एक परिवार के लिए ही नही दिया था किन्तू आज इतने परिवार टुट रहे है तो परमात्मा का ज्ञान इन सारें परीवारों को जोडने के लिए दिया है परमात्मा केवल महाभारतमें दर्शाये हूए एक परिवार के लिए नही आया किन्तू आज के इतने परिवार टुट रहे है इन सभी के लिए परमात्मा आ रहे है ।

... २

कौरव तथा कु-परिवार की कहानी को स्पष्ट करतें हूए उषादीदी बोले- कुरु शब्द का अर्थ है करना अथवा करो। कौरव अर्थात जो भगवान से विपरीत बुद्धी । महाभारत में कहा जाता है विनाशकाले भगवानसे प्रितबुद्धि विजयंती और विपारित बुदी नाशवंती । आज के संसार में भगवान से प्रित करने वाले कितने प्रतिशत लोग होंगे, और प्रित न करने वाले कितने है । दुर्योधन ने यही कहा की हे प्रभू धर्म क्या है अधर्म क्या है यही भी मै जानता हू, किन्तू धर्म ग्रहण करने की शक्ति मुझमें नही और अधर्म मै छोड नही सकता. ठिक आज की संसार में भगवान को मानने वाले कितने,

महाभारत में कई चीजें ऐसी है जिसपर हमने विचार ही नही किए , सोच ही नही चलाई भगवान मार्गदर्शन कर सकता है किन्तू हमारे कर्म में हस्तक्षेप नही करते, भगवान ने कहा मै तुम्हारे कर्म में नही आऊगा कर्म तो तुम्हें करना ही है, संघर्ष तुम्हे करना है । मै मार्गदर्शन अवश्य करुंगा किन्तू कर्म तुझे करना है । पाण्डवों का आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट करतें हूए राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी उषादिदीने कहा की, युद्ध में स्थिर बुद्धि - युदिष्टीर, भिम अर्थात शक्तिशाली आत्मा । दुसरें शब्दामें कहे प्रबल इच्छा शक्ति । अर्जुन माना अर्जित करने वाला, ग्रहण, सिखने वाले बहोत कम मनुष्य होंगे, आज संसार में किसी को कहें कुछ सिंखें लेकिन मनुष्य कहतें की समय नही ।

आधुनिक समाज में हमने हमारे जीवन को बडे-बडे कार्यो से भर दिया और किन्तू छोटे-छोटे आवश्यक कामों को समय नही दिया । संसार में भगवान में सभी को एक जैसा समय दिया किसी को ज्यादा और कम नही। आज हमारी ऐवरेज दिनचर्या को देखते हूए बहोत समय हम व्यर्थ गवांते है, बचपन से बुढापे तक कितना समय हमने हमारे लिए दिया है ? आत्मशुद्री के समय निकालना अत्यावश्यक है इस बात पर हमारा ध्यान ही नही गया । क्या हम डॉक्टर को कहेंगे हमारे लिए टाईम नही डॉक्टर कहेंग ठिक है तो मरो । हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अवश्य टाईम निकालते, ठिक उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए समय अवश्य निकालना पडेगा । किस और जान हमारे पर निर्भर है पाण्डव या कौरव पक्ष । युधिष्ठीर , भीम नहीब ान सकतें तो अर्जुन तो बनों , अर्जुन नही तो नकुल तो बनो । नकुल अर्थात नियम पर चलने वाले, ठिक है नकुल नही तो सहदेव तो बनें । सहदेव अर्थात् सहयोगी दिव्य दृष्टि, दिव्य बुद्धि वाले । सभा में उपस्थित श्रोताओं को उन्होंने कहा, आप सभी इतना समय निकाल कर ज्ञान सुनने के लिए आये तो आप अर्जुन हो , मुबारक हो आप अर्जुनों को जो कमसे कम ज्ञान अर्जन करने धारण करने के लिए आये। आप धार वासी अर्जुन जैसे जो धारण करने के लिए आये है ।

कौरव अर्थात अधर्म पक्ष के वाचक, धृतराष्ट्र अर्थात् जो राजसत्ता, बाहुबल या भूमि के अभिमान वाला गांधारी अर्थात् विवेक रुपी आंखो पर सदा अज्ञानता की पट्टी बांधे हुए । कौरवों के नाम 'दु' अक्षरोंसे शुरु होते है। आज के जामने में कोई मातपिता अपने बच्चों के नाम 'दु'से नही लिखते, तो क्या वजह होगी जो कौरवों नाम 'दु' से शुरु होते - दुर्योधन अर्थात धन का दुरुपयोग करने वाला क्या आज के संसार में ऐसा कोई पूत्र नही जो बाप के पैसों का दुरपयोग कर रहे , बहोत मिलेंगे । आज की दुनिया का जो कर्मक्षेत्र है, वही करुक्षेत्र का मैदान ... ३

है, आज मनुष्य को हर समय संघर्ष का सामना पडता है, यहॉ बैठे भी बुद्धीयोग संघर्ष चल रहा है, अर्जुन जैसी स्थिती भी होगी ज्ञान सुनना अच्छा लग रहा होंगा किन्तू बुद्धी में घर-व्यवसाय के कामकाज भी सताते रहेंगे ।

आज विश्व जब महाविनाश के कगार पर खडा है तो यही वही कुरक्षेत्र वाली स्थिति है जो महाभारत की स्थिती है जीवन संग्राम में शाश्वत विजय का क्रियात्मक प्रशिक्षण है, इसलिए युद्ध - ग्रांथ है, जो वास्तविक विजय दिलाता है, धर्म क्षेत्र में और कुरक्षेत्र में क्या हो रहा है, आज धर्म की बातों को अनुसरण करने के लिए भी संघर्ष करना पड रहा है, कुरुक्षेत्र केवल हरियाणा प्रदेश का एक मैदान नही । आज भी आप हरियाणा में कुरक्षेत्र का मैदान देखेगे की वह छोटा है अक्षणो सेना कैसे खडी होगी, कुरुक्षेत्र का मैदान तो अब भी मौजूद है परंतू एक कुरुक्षेत्र हम सभी के भितर है हमारी अन्तर्चेतना में आसुरी और दैवी शक्तिया है जो एक दुसरे के सामने तैनात है और हमारी चेतना के भीतर यह युद्ध निरंतर चलता है ।

भगवान के पास युद्ध करना के शक्ति थी तो क्या युद्ध का समाधान करने कि शक्ति नही थी, सच्चाई है की भगवान मानसिक युद्ध से खेलने की शिक्षा देते है । आज का मनुष्य भी जो कायरता का मार्ग दर्शाता है । गीता माना आपका परमात्मा से एक संवाद है, हमने इस संसार को अत्याधिक जटिल और दूषित बना दिया है, हम इसे रहने लायक एक बेहतर विश्व भी बना सकते है बशर्ते हर व्यक्ती अपने लिए यह निश्चय करें की वह कहाँ जान चाहते है और अपने उस लक्षित बिन्दू तक कैसे पहूँच ।

गीता में वर्णित सांख्य योग के बारें ब्रह्माकुमारी उषादीदीने कहा की, यह शरीर ही एक कर्म करने का क्षेत्र है इस शरीर रुपी खेत में बाए भले और बुरे कर्म का बीज सदैव संस्कार रुप में उगगते है दस इन्दियाँ इस क्षेत्र का विस्तार है । गीता में अर्जुन को भरतवंशी के रुप में दिखाई गया है । जैसे जल को जिस आकृती में डालो तो उस अनुसार विषया आकार लेता है । वैसे विषयों का है । जैसे देह में देहधारियों की बाल्यावस्था , यौवन और बुढापे ये तीन अवस्थाऐं है इस प्रकार दुसरी देह की प्राप्ति भी एक परिवर्तीत अवस्था है उसमें आत्मा का नाश नहीं होता ।

आत्मा की शाश्वताता के बारें में उन्होने स्पष्ट किया की, आत्मा कभी न मरती ना जन्म लेती है यह अजन्मा है, अविनाशी शाश्वत है और युीन है । गणें के द्वारा इनकी चमक बढती है और विकारों के द्वारा इसकी प्रभा कम होती है,शारिरिक बंधनों से वह कमजोर होती और सांसारिक बंधनों से मुक्त होने पर हल्का पन महसूस करती है । जैसे व्यक्ति नए वस्त्र धारण करने के लिए पुराने वस्त्रों को बदलता वैसे आत्मा का है उसे नया शरीर धारण करने में खुशी होती । भगवान ने कहा हे अर्जुन : स्वधर्म देखकर भी तू भय करने योग्य नही है, क्योंकि धर्मयुक्त युदद्व से बढकर अन्य कोई परमकल्याणकारी मार्ग नही है किन्तू यदि इस धर्मयुक्त युदद्वध नही करेंगा तो स्वधर्म और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा । आत्मीक सम्पत्ती ही स्थिर सम्पत्ती है यह ज्ञानयोग सांख्य सिद्धांतनुसार है। आत्मा का गुणधर्म कौनसा है, जिसके गुणधर्मो के कारण भी हमे भय नही होना चाहिए ।हमारे जीवन में भी अथाह क्षमता है, किन्तू हमें पता नही इसलिए हम भयभित होते जीवन का सदुपयोग करने का

.... ४

हमेंपता नही, ऐसे अपने गरीबी का एहेसास करते हमारे पास कोई भी नही, किन्तू हमारे पास इतनी शक्ति, क्षमता, स्वधर्म है इसलिए हमे भयभित होने की आवश्यकता नही,

शरीरकी वास्तविकता यही है की शरीर पाँच तत्वों से बना है । आत्मा की वास्तविकता है गुणों का खजानाा आत्मा का स्वधर्म है सात गुण ा आधात्मिक ज्ञान, पवित्रता, प्रेम, शान्ति, सुख, आनंद शक्ति यह है आत्मा के सात गुण । अच्छी बातें ज्ञान हर आत्मा को अच्छा लगता है, फालतू बातों में आत्मा को आकर्षन ानही, आत्मा की वास्तविकता ज्ञान है, पवित्रता है, प्रेम है । प्यार से कोई बात नही करता तो जीवन से नफरत आती भावार्थ यह आज हर इन्सान को प्यार मिलता है तो आराम महसूस करता, इर किसी को प्यार, शान्ति सुख चाहिए। यह शक्ति हमारे पास है किन्तू उसको बाहर कैसे लावे यह ज्ञान हमारे पास नही है, आत्मा के गुणधर्म को बाहर लाना आता नही इसलिए भय लगता, भय कि स्थिती होती. जिसके पास इतनी क्षमता है वह भय करने योग्य है ?

हमारे जीवन में भी स्वधर्म ऐसी चीज है जो हम उसे भूल दुसरें जगह देखने खोजन के बाहर जाते । अज्ञान इसका मुल कारण ा बाहर खोज रहे किन्तू सबकुछ अपने भीतर है यह ज्ञान ही । संसार में जीतने भी महान आत्मायें हूए उन्होंने स्वधर्म के आधार पर जीवन जिया । स्वामी विवेकानंद, गौतमबुद्व, महाविर मदर तेरेसा, प्रकाशमणीदाादी इनका जीवन देखये तो स्वधर्म के आधारपर ही उन्होंने सांसार को मार्गदर्शना दी ।

आसुरी संस्कारों को जीतने के लिए कर्मयोग का आधार भगवानने बताया है ।स्वधर्म के आधार पर कर्म करें तो इस कर्म से सम्पादित धर्म जन्म-मृत्यू रूपी महान भय से उद्वार करने वाला होता है किन्तू इससे निश्चयात्मक बुद्वि हो । कर्म करना ते अधिकार है किन्तू फल परछाई के समान है इसलिए फल की आशा मत करो ।समत्व बुद्वि के साथ कर्मो का आचारण कौशल ही योग है इस लिए आसक्ति और संग दोष को त्यागना । स्थिर बुद्वि पुरूष के लक्षण ा जो व्यक्ति कछूए की तरह अपनी कर्मेन्द्रियों को समेट कर उन्हें इन्द्रिय ा विषयक रसनाओं से हटाना जानता है वही स्थितप्रज्ञ है । हमारी बुदद्वी क्यों भटकती ा विषयों का चिन्तन करनेवाला पुरूष विषयों में आसक्त हो जाता है, आसक्ति से कामना उत्पन्न होती, क्रोध से अविवेक उत्पन्न होता । योग साधना रहित पुरष के अन्तकरण में निष्काम कर्मयुक्त बुद्वि नहीं होती । उसके अन्करण में भाव नही होता और भाव रहित पुरष को शान्ति नही मिलती, । अशान्त पुरुषो को सुख अर्थात शाश्वत् सनातन की प्राप्त नहीं होती । जो हमारे मन के प्रश्न वही अर्जुन के प्रश्न है , उसका समाधान गीता में है ।

०००००